International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

बंगाल में अंग्रेजी शक्ति की स्थाना में लार्ड क्लाइव की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Jyoti
MA in History, MDU Rohtak
Reg. No. 04-MKR-110
Email : siwacharya@gmail.com

प्लासी के युद्ध के पश्चात् मीर जाफर बंगाल का नवाब बना। वह एक अयोग्य तथा दुर्बल नवाब था। वह आन्तरिक एवं बाह्य रूप से बंगाल की रखा करने में असफल रहा। वह पूरी तरह से अंग्रेजों के हाथों की कठपुतली बना रहा। प्रशासन की वास्तविक शक्ति अंग्रेजों अर्थात् लार्ड क्लाइव के हाथों में थी। मीर जाफर अनेक समस्याओं से घिरा हुआ था। खदी पर बैठते समय उसने एक विशाल धन–सम्पति अंग्रेजों का प्रदान की थी जिसमें बंगाल का खजाना खाली हो गयाा। अब उसके पास प्रशासन चलाने के लिए भी धन नहीं बचा। क्लाइव नवाब से बार–बार धन की मांग करता रहा। मीर जाफर उसकी मांग को ठुकराने की स्थिति में नहीं था। मीर जाफर यदि योग्य होता तो वह बड़ी आसानी से अंग्रेजों के प्रभाव से मुक्त हो सकता था। परन्तु उसकी अयोग्यता उसके प्रत्येक कार्य में रूकावट बन रही थी। इसके अलावा उसने दुर्लभ राय तथा राम नारायण जैसे हिन्दु अधिकारियों को भी दबाने का प्रयास किया जो उसकी महान् राजनीतिक भूल मानी जाती है। यद्यपि क्लाइव की मध्यस्थता से नवाब तथा हिन्दू अधिकारियों में समझौता हो गया था, परन्तु इससे मीर जाफर की दुर्बलता एवं अयोग्यता जग–जाहिर हो गई।

नवाब के अंग्रेजों से मतभेद :–

मीर जाफर 1757 ई. से 1760 ई. तक बंगाल का नवाब रहा। इस अवधि के दौरान वह अंग्रेजों की हर इच्छा को पूरी करता था। परन्तु समय के साथ–साथ अंग्रेजों की इच्छाएँ भी बढ़ती चली गई। जिससे नवाब मीर जाफर पूरी तरह से परेशान हो गया। दूसरी ओर, बंगाल

की दुर्बल, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति से लाभ उठाने के उद्देश्य से मुगल सम्राट अली गौहट ने अवध के नवाब शुजाउद्दौला के साथ मिलकर 1759 ई. में बंगाल पर आक्रमण कर दिया। परन्तु लार्ड क्लाइव की सहायता से मीर जाफर के पुत्र मीरन मुहम्मद ने उसके आक्रमण को असफल बना दिया। इसके पश्चात् भी उन्होंने 1760 और 1761 ई. में भी बंगाल पर अधिकार करने का असफल प्रयास किया।

1759 ई. तक मीर जाफर ने अंग्रेजों के प्रभाव से मुक्ति पाने का मन बना लिया। उसी समय डचों ने भी बंगाल पर आक्रमण कर दिया। हॉलवेल का मानना था कि डचें का आक्रमण मीर जाफर के षड्यन्त्र का परिणाम था। परन्तु उन्होंने बंगाल में व्यापारिक सुविधाएँ प्राप्त करने तथा अंग्रेजों के प्रभाव को कम करने के लिए आक्रमण किया था। इस युद्ध में डचों की पराजय हुई। मीर जाफर के पुत्र मीरन और अंग्रेजों से डचों ने संन्धि कर लीं इस सन्धि की शर्तें इस प्रकार थी –

1. नवाब डचों को कुछ व्यापारिक सुविधाएँ प्रदान करेगा।
2. डच न तो नवाब से युद्ध करेंगे और न ही बंगाल की सीमाओं पर किलेबन्दी करेंगे।
3. वे अपनी बस्तियाँ, (पटना, चिनसुरा ओर कासिम बाजार की रक्षा के लिए अधिकतम 125 यूरोपीयन सैनिक ही रख सकेंगे।
4. उन्होंने अपने जहाजों और सैनिकों को नवाब की सीमाओं से बाहर ले जाने का आश्वासन दिया।
5. शर्तों के उल्लंघन करने पर नवाब को उन्हें बंगाल से खदेड़ने का अधिकार होगा।

अंग्रेजों ने इन सभी गतिविधियों के लिए मीर जाफर को ही दोषी ठहराया। अगस्त, 1760 ई. को कर्नल केलॉड को गवर्नर वेंसिटार्ट ने सुझाव दिया कि यदि मीर जाफर बर्दमान तथा नदिया जिले अंग्रेजों को दे दे तो वह मीर जाफर कोही नवाब बनने देगा। परन्तु मीर जाफर इसके लिए सहमत नहीं हुआ।

मीर कासिम से समझौता :–

सितम्बर, 1760 ई. में मीर कासिम ने बंगाल की राजनीतिक परिस्थितियों का लाभ उठाते हुए बंगाल का नवाब बनने के लिए अंग्रेजों से सांठ–गांठ कननी आरम्भ कर दी। उसने अंग्रेजों को धन एवं प्रदेश देने का वचन दिया। 27 दिसम्बर, 1960 ई. को मीर कासिम तथा कलकता काउन्सिल के बीच सन्धि हो गई।

इस संधि की शर्तें इस प्रकार थी :–

1. मीर कासिम नवाब बनने के उपरान्त ईस्ट इण्डिया कम्पनी की बर्दमान, मिनापुर तथा चटगाँव के जिले प्रदान करेगा।
2. वह कम्पनी को दक्षिण विजय के लिए 5 लाख रूपया देगा।
3. दोनों शत्रुओं से एक–दूसरे की सहायता करेंगे।
4. कम्पनी बंगाल के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी, परन्तु नवाब को सैनिक सहायता प्रदान करेगी।
5. सिल्हट के चूने के व्यापार में नवाब तथा कम्पनी का आधा–आधा भाग होगा।

मीर कासिम का नवाब बनना :–

संधि को कार्य रूप प्रदान करने के लिए वेंसिटार्ट तथा कोलॉड 14 अक्टूबर, 1760 ई. को बंगाल गए। अंग्रेजों ने राजमहल का घेरा डाल दिया और मीर जाफर को गद्दी से हटाकर मीर कासिम को बंगाल का नया नवाब घोषित कर दिया। अंग्रेजों ने मीर जाफर के लिए 15000 रूपया मासिक पेंशन निर्धारित की और उसे कलकता में ही रहने की अनुमति प्रदान कर दी।

गद्दी पर बैठते ही मीर कासिम ने कम्पनी के अधिकारियों को उपहार भेंट किए। उसने वेंसिटार्ट को 5 लाख रूपया, हॉलवेल को 2, 70, 000 कर्नन केलॉड को 2 लाख रूपये तथा अन्य लोगों को 7 लाख रूपये प्रदान किए। इसके अलावा उसने कम्पनी को बर्दमान, मिदनापुर तथा चटगाँव के प्रदेश तथा 17 लाख रूपये अतिरिक्त प्रदान किए।

बक्सर का युद्ध –

1760 ई0 में मीर कासिम बंगाल का नवाब बना। वह अंग्रेजों की कृपा से ही नवाब बना था, परन्तु शीघ्र ही उसकी ईस्ट इण्डिया कंपनी के अधिकारियों के अनबन हो गइ। उसे 1760 से 1764 ई. तक बंगाल पर शासन किया। 1764 ई0 में अंग्रेजों ने मीर कासिम को गद्दी से हटाकर मीर जाफर को पुनः बंगाल का नवाब घोषित कर दिया। परिणामस्वरूप अंग्रेजों ओर मीर कासिम के बीच बक्सर का युद्ध लड़ा गया।

युद्ध के कारण और परिस्थितियाँ :–

बक्सर के युद्ध के मुख्य कारण एवं परिस्थितियाँ इस प्रकार थी –

1. मीर कासिम की योग्यता :–

मीर कासिम मीर जाफर का दामाद था। उसने अपने ससुर के विरूद्ध षड्यंत्र रचकर अंग्रेजों की सहायता से बंगाल की गद्दी प्राप्त की थी। गद्दी पर बैठते ही उसने अंग्रेजों के साथह हुई संधि की शर्तों को पूरा किया। इसके पश्चात् उसने बंगाल के प्रशासन को कुशलतापूर्वक चलाना आरम्भ किया। मीर कासिम एक योग्य व्यक्ति था। वह किसी भी कीमत पर अंग्रेजों के हाथों में एक खिलौना बनकर नहीं रहना चाहता था। सर्वप्रथम उसने अपने को अंग्रेजो के प्रभाव से मूक्त करने के लिए बंगाल की राजधानी को मुर्शिदाबाद से मुंघेर ले गया। क्योंकि मुर्शिदाबाद में अंग्रेजों का ज्यादा हस्तक्षेप रहता था और वह नगर राजनीतिक षड्यन्त्रों का अड्डा बन गया था। इसके पश्चात् नवाब ने अपनी सेना को यूरोपीय आधार पर संगठित किया। उसने मुंघेर में तोपों और बन्दूकों को बनाने के कारखाने स्थापित किए, क्योंकि उसे शाहजादा अली गौहर के साथ–साथ बंगाल तथा बिहार के जमींदारों से भी लोहा लेना था। इसके अलावा वह अपने साम्राज्य को नेपाल की ओर भी विस्तृत करना चाहता था। अतः इनसे निपटने के लिए उसने अपने सैनिकों को प्रशिक्षण दिया। इस कार्य में अर्मीनिया के एक अधिकारी गुर्गिन खां और एक मुस्लिम अधिकारी ताकोखां ने बहुत सहायता की।

मीर कासिम ने आंतरिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने के पश्चात्, बंगाल की आर्थिक व्यवस्था को भी सुधारने के प्रयास किए। उसने भ्रष्ट तथा रिश्वतखोर कर्मचारियों पर बड़े–बड़े जुर्माने लगाए। उसने कुछ नये कर भी लगाए तथा पुराने करों में भी वृद्धि की। उसने एक नया कर खिजरी जमा भी जमाया। इस प्रकार कुछ ही दिनों में बंगाल राजनीतिक एवं आर्थिक दृष्टि से एक सम्पन्न राज्य बन गया।

2. अली गौहर के प्रश्न पर अंग्रेजों और नवाब में मतभेद :–

मुगल सम्राट आलमगीर की 1760 ई. में हत्या हो गई। इस समय मुगल शाहजादा अली गौहर बिहार में था। उसने अपने को शाहआलम के नाम से भारत का सम्राट घोषित कर दिया। अंग्रेजों ने सम्राट को पटना बुलाया, क्योंकि वे सम्राट से व्यापारिक लाभ प्राप्ति करना चाहते थे। उन्होंने मीर कासिम को भी निर्देश दिया कि वह शाहआलम को मुगल सम्राट स्वीकार कर ले, परन्तु मीर कासिम को डर था कि इसके बदले में कहीं अंग्रेज सम्राट से, बिहार तथा उड़ीसा की दीवानी प्राप्त कर लें। इसके लिए वह कुछ नहीं कर सकेगा और यदि विरोध किया तो वह विद्रोही माना जाएगा। अतः वह चाहता था कि पटना से चले जाने के बाद ही वह शाहआलम को सम्राट स्वीकार करे, परन्तु अंग्रेजों ने उसे ऐसा करने के लिए धमकी दी। अतः मीर कासिम ने मजबूर होकर मुगल सम्राट को अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी और वह सम्राट से मिलने पटना भी चला गया। शाहआलम मराठों से सहायता का आश्वासन मिलने के पश्चात् दिल्ली चला गया, परन्तु इससे अंगेजों और मीर कासिम के बीच मतभेद हो गए।

3. राम नारायण के मामले पर मतभेद :–

राम नारायण मीर कासिम का डिप्टी नवाब था। उसके मीर कासिम के साथ मतभेद हो गए अतः वह नवाब के डर से भागकर अंग्रेजों की शरण में चला गया। नवाब ने अंग्रेजों से कहा कि उसे उसके हवाले कर दिया जाए, परन्तु अंग्रेजों ने ऐसा करने से इंकार कर दिया। अंग्रेज अक्सर नवाब के विरोधियों को अपने पास शरण देते थे, परन्तु इस बार उल्टा हुआ।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

अंग्रेजी कम्पनी के गवर्नर वेंसीटार्ट ने राम नारायण को नवाब को सौंप दिया। इससे नवाब को यह गलतफहमी हो गई कि अंग्रेजों ने उससे डर कर राम नारायण को उसे सौंप दिया। अतः वह अंग्रेजों के विरूद्ध कार्य करने लगा जिससे अंग्रेज उससे नाराज हो गया।

4. अनुचित व्यापार पर रोक :–

व्यापार के प्रश्न पर अंग्रेजों और नवाब के बीच काफी समय से झगड़ा चल रहा था। यहां तक कि कंपनी के अधिकारी भी दस्तक प्रणाली के आधार पर खूब आर्थिक लाभ कमाते थे। वे हस्ताक्षरों अथवा दस्तकों को हिन्दू और मुस्लिम अर्थात् भारतीय व्यापारियों को बेच देते थे, जिससे बंगाल के नवाब को बहुत आर्थिक हानि होती थी। इस विषय में नवाब तथा अंग्रेज गवर्नर वेंसीटार्ट एवं हेस्टिंग्ज ने मुंघेर में आपस में भेंट करके निर्णय लिया कि अंगेज आन्तरिक व्यापार पर एक प्रतिशत कर प्रदान करें, परन्तु कलकता कौंसिल ने इस समझौते को मान्यता प्रदान नहीं की। अतः मीर कासिम ने भारतीय व्यापारियों को भी बिना चुंगी दिए व्यापार करने की अनुमति प्रदान कर दी। इससे अंग्रेजी कंपनी को बहूत हानि हुई। अंग्रेज व्यापारी भारतीय व्यापारियों से मुकाबला नहीं कर सके। नवाब के इस कार्य से जनता तथा व्यापारियों को बहुत लाभ हुआ। इसके अलावा मीर कासिम ने अंग्रेजों की समस्त् व्यापारिक सुविधाएँ वापस ले ली। कलकता कौंसिल ने भारतीयों पर पुनः कर लगाने के लिए नवाब को आदेश दिया, परन्तु नवाब ने इसे अस्वीकार कर दिया। इससे नवाब तथा अंग्रेजों के संबंध इतने बिगड़ गए कि दोनों के बीच युद्ध अनिवर्य हो गया।

5. मीर कासिम तथा अंग्रेजो में युद्ध :–

अपनी व्यापारिक सुविधाओं को पुनः प्राप्त करने के लिए अंग्रेजों ने कार्यवाही आरम्भ कर दी। उसने अंग्रेजों की नावों को जो युद्ध सामग्री में लदी हुई थी। मुंघेर में रोक लिया। इस पटना में कंपनी के एक सेनापति एलिस ने अपने मित्रों के निजी व्यापार की सुविधाओं को पुनः प्राप्त करने के लिए आक्रमण करने शुरू कर दिए। उसने पटना पर अधिकार कर लिया, परन्तु मीर कासिम ने पुनः सेना भेजकर पटना पर पुनः आधिपत्य स्थापित कर लिया। अब

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

अंग्रेजों ने मेजर एडमस के नेतृत्व में मुर्शिदाबाद की ओर प्रस्थान किया। मीर कासिम की सेना भी मीर तकी उदयनाला नामक स्थान पर नवाब व अंग्रेजों के बीच युद्ध हुआ, जिसमें मीर कासिम पराजित पराजित हो गया। मीर कासिम अंग्रेजों से बदला लेने के लिए मुंघेर की सुरक्षा व्यवस्था कड़ी करने के उपरान्त पटना की ओर रवाना हुआ। नवाब ने एलिस को हराकर 200 अंग्रेज सैनिकों को बंदी बना लिया। उसी समय एडमस के नेतृत्व से सेना पटना पहुंच गई। अंग्रेजों ने नवाब को कटवाह घेरिया, सूती और उदयनाला के युद्धों मे पराजित कर दिया। नवाब ने उन सभी अंग्रेज बन्दियों को मौत के घाट उतरवा दिया। इस घटना को पटना हत्याकांड के नाम से जाना जाता है। एडमस ने नवाब को पराजित करके अवध की ओर भगा दिया और पटना पर अधिकार कर लिया।

मीर जाफर का दोबारा नवाब बनना :—

मीर कासिम पटना के युद्ध में पराजित हो जाने के पश्चात् अवध के नवाब शुजाउद्दौला की शरण में चला गया। अब अंग्रेजों ने मीर जाफर को पुनः बंगाल का नवाब बना दिया। नवाब बनते ही मीर जाफर ने अंग्रेजों को सभी व्यापारिक सुविधाएँ लौटा दी और उन्हें कुछ प्रदेश भी प्रदान किए। नवाब ने भारतीयों पर 25 प्रतिशत व्यापारिक कर भी लगा दिए। नवाब ने अंग्रेजों को युद्ध की क्षतिपूर्ति के लिए धन भी देने का आश्वासन दिया। यहां तक कि अंग्रेजों ने नवाब की सेना की संख्या में भी भारी कटौती कर दी।

बक्सर के युद्ध की घटनाएँ :—

बक्सर का युद्ध अंग्रेजों और मीर कासिम के बीच वैसे तो 10 जून, 1763 ई. को आरम्भ हो गया था। जब पटना में दोनों की सेनाओं के साथ झड़प हुई थी। मीर कासिम अंग्रेजों से पराजित होकर अवध के नवाब शुजाउद्दौला की शरण में चला गया था। डॉडवेल के अनुसार, ''कंपनी और नवाब के बीच युद्ध इच्छाओं के नहीं बल्कि परिस्थितियों के कारण था।'' उस समय मुगल सम्राअ शाहआलम भी अवध में ही था। मीर कासिम अंग्रेजों के विरूद्ध अवध के नवाब शुजाउद्दौला से सहायता मांगी और इसके बदले में सेना के खर्च के लिए 11 लाख

रूपया प्रतिमाह देना भी स्वीकार किया। शुजाउद्दौला तुरन्त ही मीर कासिम को सहायता देने को तैयार हो गया। यहां तक कि मुगल सम्राट भी मीर कासिम की सहायता करने को तैयार हो गया। तीनों की संयुक्त सेना ने पटना का घेरा डालने के पश्चात् अपनी सेनाएँ बक्सर के मैदान में खड़ी कर दी। समाचार प्राप्त होते ही अंग्रेजों ने भी मुनरो के नेतृत्व में सेनाएँ बक्सर की ओर भेज दी। सितम्बर, 1764 ई. को बक्सर का युद्ध लड़ा गया। 22 अक्टूबर, 1764 ई. कोअंग्रेजों ने तीनों की सेनाओं को पराजित कर दिया। शाहआलम् अंग्रेजों से जा मिला। शुआउद्दौला ने अंग्रेजों के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया और मीर कासिम ने भी युद्ध का मैदान छोड़ दिया। वह इधर–उधर भटकता रहा और 1777 ई. में नेपाल में उसकी मृत्यू हो गई। सर जेम्स स्टीफन के अनुसार, ''अंग्रेजी प्रभत्व की दृष्टि से बक्सर के युद्ध का प्लासी के युद्ध की अपेक्षा अधिक महत्व है ंइस युद्ध में अंगेजों के 847 सैनिक मारे गए थे, जबकि शत्रु पक्ष के लगभग 2000 सैनिक मृत्यू के शिकार हुए थे। बक्सर के युद्ध से बंगाल पर अंग्रेजों का पूर्ण आधिपत्य स्थापित हो गया।'' रैम्जे म्योर ने भी लिखा है कि ''बक्सर के युद्ध ने बंगाल पर कंपनी के शासन को पूर्ण रूप से लागू कर दिया।

युद्ध के परिणाम व महत्व :–

भारत के इतिहास में बक्सर का युद्ध बहुत महत्वपूर्ण युद्ध माना जाता है। यह निर्णायक युद्धों में से एक था। जिसमें अंग्रेजी विजयी हुए थे। यह युद्ध प्लासी के युद्ध से भी ज्यादा महत्वपूर्ण था। इसने प्लासी के अधूरे कार्य को पूरा कर दिया था अर्थात् बंगाल पर अंग्रेजों का शासन स्थापित हो गया। जी. बी. मालेसन के अनुसार, ''चाहे आप इसे देशी तथा विदेशीयों के बीच द्वन्द्व युद्ध समझें या ऐसी सारगर्भित घटना जिसके परिणाम स्थाई तथा विशाल थे, बक्सर को सबसे निर्णायक युद्धो में गिना जाएगा।''

1765 ई. में लॉर्ड क्लाइव तीसरी बार भारत आया। उसने 1765 ई. में मुगल सम्राट शाह आलम के साथ एक संधि की, जिसे इलाहाबाद की संधि के नाम से जाना जाता है। इस संधि की मुख्य शर्तें इस प्रकार थी –

1. इस संधि के अनुसार मीर जाफर को बंगाल का नवाब मान लिया गया। वह पूरी तरह अंग्रेजों के हाथों की कठपुतली था।
2. अवध के नवाब शुजाउद्दौला को युद्ध का अपराधी मानते हुए उससे युद्ध क्षतिपूर्ति के लिए 50 लाख रूपये हर्जाने के तौर पर लिये और उसे इलाहाबाद एवं कडा के प्रदेश भी ले लिए गए।
3. मुगल सम्राट शाहआलम से अंग्रेजों ने नरम व्यवहार किया। उसे अंग्रेजों ने 26 लाख रूपया वार्षिक देना स्वीकार किया। यहां तक कि इलाहाबाद और कड़ा के प्रदेश भी उसे दे दिए गए जो अवध के नवाब से प्राप्त किए थे।
4. इसके बदले मुगल सम्राट से अंग्रेजों ने बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा की दीवानी प्राप्त कर ली।

निष्कर्ष :–

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि बक्सर का युद्ध एक निर्णायक युद्ध था, जिसने बंगाल में अंग्रेजों की सर्वोच्चता स्थापित कर दी। इस युद्ध ने वह कार्य पूर्ण कर दिया जो प्लासी का युद्ध पूर्ण नहीं कर पाया था। अब अंग्रेज बंगाल में सर्वसर्वा थे। इस युद्ध से अंग्रेजों का हौसला बहुत बढ़ गया था। अब उन्होंने साम्राज्यवादी नीति को अपनाना आरम्भ कर दिया था।

1. Bipan Chandra, The Rise and Growth of Economic Nationalism in India
2. Tripathi & De, Freedom Struggle.
3. Galagher Johnson & Seal, locality, Province and Nation.
4. Grover, B.L., A Documentary Study of the British Policy towards Indian Nationalism.
5. Low, D.A. (ed), Congress and the Raj.
6. Majumdar, R.C., History and Culture of the Indian People, vols. IX, X, XI.
7. Melane, J, Indian Nationalism and the Early Congress.
8. Mehortra, S.R., The Emergence of the Indian National Congress.
9. Sarkar, Sumit, The Swadeshi Movement in Bengal.
10. Seal, Anil, The Emergence of Indian Nationalism.

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

11. Dutt B.P., India Today.
12. Tara Chand, History of freedom Movement in India.
13. Agrov Danie, Moderates and Extremists in Indian Nationalist Movement.
14. Dayal B., The Development of Modern Indian Education (1953).
15. Mukerjee, S.N., History of Education in India (1957).
16. Nurullah and Naik, History of Education in India during the British Period (1956).